विज्ञान संचार में तारामंडलों की भूमिका

चक्रेश जैन

महान भारतीय खगोलविद वराहमिहिर की कर्मभूमि उज्जैन में प्रदेश के अत्याधुनिक हाइब्रिड तारामंडल के लोकार्पण के पूर्व तीन-दिवसीय कार्यक्रम की शुरुआत 10 जून को राष्ट्रीय सेमिनार के साथ हुई, जिसमें 'विज्ञान संचार में तारामंडलों की भूमिका' पर चर्चा हुई। विज्ञान प्रसार और म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस राष्ट्रीय सेमीनार में दिल्ली, मुंबई, बैंगलुरु तथा कोलकाता के तारामंडलों के निदेशकों, खगोलविदों, विज्ञान संचारकों एवं अन्य शोधार्थियों ने भाग लिया।

सेमीनार का उद्घाटन करते हुए देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर के कुलपति प्रो. डी.पी. सिंह ने कहा कि युवाओं की विज्ञान शिक्षा से बढ़ती दूरी चिंताजनक है। विज्ञान शिक्षा को रोचक और सार्थक बनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि जन सामान्य को विज्ञान से जोड़ने और विज्ञान संचार में तारामंडलों की अहम भूमिका रही है। म.प्र. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के महानिदेशक प्रो. प्रमोद वर्मा ने अध्यक्षीय भाषण में तारामंडल को विज्ञान शिक्षण एवं मनोरंजन का प्रभावी माध्यम बताया। उन्होंने कहा कि उज्जैन में स्थापित तारामंडल 'एड्यूटेनमेंट' में अहम भूमिका निभाएगा। राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद के प्रमुख डॉ. बी.पी. सिंह ने भारत में नेहरूजी के नेतृत्व में वैज्ञानिक मिज़ाज को बढ़ावा देने के प्रयासों की चर्चा करते हुए कहा कि विज्ञान संचारकों के सामने आज सबसे बड़ी चुनौती समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति को वैज्ञानिक सोच की ओर प्रेरित करना है। विज्ञान प्रसार के निदेशक डॉ. आर. गोपीचन्द्रन ने विज्ञान संचार को नए संदर्भों के परिपेक्ष्य में देखने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक सोच का वास्तविक ज़िन्दगी से सरोकार है।

सेमीनार के तकनीकी सत्रों में वक्ताओं ने तारामंडल की नई भूमिका, इसके ज़रिए विज्ञान लोकप्रियकरण, मोबाइल तारामंडलों की प्रांसगिकता जैसे विषयों पर विचार व्यक्त किए। जवाहरलाल नेहरू तारामंडल, बैंगलुरु की डॉ. बी.एस. शैलजा ने कहा कि अब तारामंडल को केवल खगोल विज्ञान तक सीमित नहीं किया जा सकता। बदलते माहौल में तारामंडल बहुउद्देशीय भूमिका निभा सकते हैं। नेहरू तारामंडल, नई दिल्ली की निदेशक डॉ. एन. रत्नाश्री ने 'आर्ट एंड साइंस ऑफ प्लेनटेरियम शो' विषय पर व्याख्यान देते हुए अपने समृद्ध अनुभव साझा किए। उन्होंने कहा कि जनसामान्य में तारामंडल की इमेज तारों और ग्रहों से सम्बंधित कार्यक्रमों के रूप में है। लेकिन आज के दौर में तारामंडल खगोल विज्ञान की ब्रेकिंग न्यूज़ और दुर्लभ खगोलीय घटनाओं का आंखों देखा हाल प्रस्तुत कर सकते हैं।

दूसरे एवं तीसरे तकनीकी सत्र में शोधपरक, रोचक और विचारोत्तेजक व्याख्यान हुए। डॉ. बी.पी. सिंह ने मोबाइल तारामंडलों की प्रासंगिकता, आवश्यकता और इससे जुड़े अन्य पहलुओं पर विचार व्यक्त किए, जबकि नेहरू तारामंडल, मुंबई के श्री अरविन्द परांजपे ने 'हैंड्स-ऑन एक्टीविटीज़ इन प्लेनेटेरियम' विषय पर व्याख्यान दिया। सेमीनार के समापन के सत्र में तारामंडल की विशेषताओं और कमियों पर विचार विनिमय किया गया। ***(स्रोत फीचर्स)***